syngenta®

NK 6560

संकर मक्का बीज

कृषि जलावायु क्षेत्र (जोन) के लिए संकर की अनुरूपता :

जोन–प्रथम–(पश्चिम बंगाल, असम), जोन–द्वितीय – (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश), जोन–तृतीय – (बिहार, झारखंड, ओड़िशा), जोन– चतुर्थ – (कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, महाराष्ट्र) एवं जोन–पंचम/पाँच – (राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश)

खेत/भूमि तैयार करने की प्रथाएं :

मिट्टी अच्छी तरह से सूखी, उपजाऊ और समतल होनी चाहिए। ५.५ – ७.८ पीएच वाली मिट्टी मकई की उपज के लिए सबसे अनुकूल हैं। एक बार की जुताई के बाद दो बार हैरो करने से मिट्टी मकई की खेती के लिए उपयुक्त बन जाती है।

बीज उपचार :

फफूँदनाशक : यह बीज मेटलैक्सिल/थिरम से उपचारित है, जो शुरूआती अवस्था के फफूंद रोगों से सुरक्षा देता है। अन्य विशेष बीज उपचार, फसल सुरक्षा के आवश्यकतानुसार किये जा सकते है।

बुआई का समय :

खरीफ	:	मई – जुलाई
खरीफ (केवल तमिलनाडु)	:	जुलाई– सितंबर
ग्रीष्म ऋतु (केवल तमिलनाडु)	:	फरवरी से मार्च

फसल की अवधि :

खरीफ	–	११० से ११५ दिन
खरीफ	–	१०० से १०५ दिन (उत्तरी भारत)

बीज दर और अंतर :

बीज दर : ७–८ किग्रा/एकड़ अंतर : पंक्ति से पंक्ति का ६० सेमी. पौध से पौध : २५ सेमी.

उर्वरक मात्रा / एकड़ समय के साथ :

मकई की अधिक पैदावार के लिए, बुआई के १०–१५ दिन पूर्व, गोबर खाद १०टन/हैक्टेयर की दर से उपयोग करें। नाइट्रोजन का उपयोग फसल अवधि के ३ चरणों में करें।

फसल की उम्र	बेसल डोज़ (० दिन)	घुटने की ऊंचाई की अवस्था (३०–३५ दिन)	फूल आने की अवस्था (५५–६० दिन)
उर्वरक मात्रा किग्रा/एकड़	यूरिया – ३५ डीएपी – ५० म्यूरेट ऑफ पोटाश – २० जिंक सल्फेट – १०	यूरिया – ५० सल्फर – ३	यूरिया – ४० म्यूरेट ऑफ पोटाश – २०

खरपतवार नियंत्रण – रसायन मात्रा एवं समय :

ऊगने से पूर्व इस्तेमाल किए जाने वाले खरपतवारनाशक एलाक्लोर ५०% ईसी का ०.५ ली./एकड़ और एट्राज़ीन ५०% डब्लूपी का १ किग्रा/एकड़ की दर से बुआई ३ दिनों के अंदर उपयोग करें, यह सुनिश्चित करें कि मिट्टी में पर्याप्त नमी हो। पोस्ट इमर्जेंट हर्बिसाइड कैलारिस एक्स्ट्रा का अनुप्रयोग @ १.४ ली/एकड़, २–३ खरपतवार पत्ती अवस्था में करें।

कीट और रोग नियंत्रण – रसायन मात्रा एवं समय :

कीट नियंत्रण :

बुआई के १७–२१ दिन बाद : स्टेम बोरर (तना छेदक) के नियंत्रण के लिए थियामेथोक्सम १२.६% + लेम्ब्डा सायहेलोथ्रिन ९.५% जिंक जेडसी ८०–१०० मिली/एकड़ और बेहतर वृद्धि के लिए आइसाबिऑन ३०० मिली/एकड़ की दर से इस्तेमाल करें।

बुआई के २०–२५ दिन बाद : फ्युराडोन 3G ८ किग्रा/हैक्टेयर की दर से पत्तों के बीच में प्रयोग करें।

रोग नियंत्रण :

घुटने की ऊँचाई की अवस्था में : पत्तों के रोगों के नियंत्रण के लिए, एजॉक्सीस्ट्रोबिन १८.२% डब्लू/डब्लू + सायप्रोकोनाझोल ७.३% डब्लू/डब्लू एससी २०० मिली/एकड़ की दर से इस्तेमाल करें।

सिंचाई की समय सारणी :

पहली सिंचाई	पौध अवस्था :	बुआई के १५ – २० दिन बाद
दूसरी सिंचाई	फूल आने से पूर्व की आवस्था :	बुआई के ३५ – ४० दिन बाद
तीसरी सिंचाई	फूल आने की अवस्था :	बुआई के ५० – ५५ दिन बाद
चौथी सिंचाई	दाने भराने की अवस्था :	बुआई के ७५ – ८० दिन बाद

फसल कटाई :

भुट्टो के दानों में नमी जब २०–२४% तक हो, तब वह कटाई के लिए तैयार है। जब दानो के नीचे की तरफ एक काला धब्बा दिखाई दे, तो फसल को कटाई के लिए तैयार है ऐसा मानना चाहिये।

अपेक्षित उपज* :

औसत : खरीफ:२०–२५ क्विंटल/एकड़।

---

*समझाई गई संकर विशेषताएं सांकेतिक हैं। विविध मिट्टी के प्रकार, जल, मौसम की स्थिति और फसल के चक्रण के परिणामस्वरूप, इस संकर की उपज अलग–अलग हो सकती है। बीज की बुआई और उपयोग करने की विधि हमारे नियंत्रण में नहीं है, इसलिए, केवल बीज की गुणवत्ता मात्र ही सुनिश्चित किया जा सकता है।